



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....  
सी. एस. एस.

दिनांक 15-12-2020 पृष्ठ संख्या.....।.....कॉलम.....2-५.....

अधिकतम  
पैदावार 91.5  
विवेटल प्रति  
हेक्टेयर तक

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

# हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में किसानों के लिए अधिक पैदावार देने वाली गेहूं की किस्म विकसित

### खाली बातें

सिफारिश अनुसार विजाइं करने पर होती अधिक पैदावार : डॉ. सहरावत

विश्वविद्यालय के अव्यूहाल निवेशक डॉ. पद्मक उहरावत ने बताया कि हाल किस्म को अव्यूहाल के अंतिम जटात में विजाइं के लिए अनुमोदित तिया तरा है। अग्री विजाइं तरावे पर इसकी प्रेक्षण प्रति एकड़ 4 ते 8 विवेटल तक अधिक लों जा सकती है। उज्जीव खाद्य की इस किस्म में विश्वविद्यालय मुस्ता की जह विकाश को अनुसार विजाइं करके उत्तित खाद उत्तरक त पानी दिया जाए तो इसकी औजान,

पैदावार 75.8 विवेटल परीं हेक्टेयर हो सकती है औ अधिकतम पैदावार 91.5 विवेटल प्रति हेक्टेयर तक लों जा सकती है। इस किस्म की आस बात यह है कि यह गेहूं को बुज्य विश्वायरी पोला रसाया व बुज्य रसाया के प्रति रोकाराही है। इसके अलावा गेहूं के प्रमुख क्षेत्रों प्रति गुणवत्ता योग्य जाति अंडमारी, लोखुं चुरीं व परिष्वें योग्य गेहूं को उत्तित दिया जाता है। इस किस्म को प्रति गेहूं सोनरशी है।



### इनकी मेहनत लाई दंग

गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उत्तर किस्म की विश्वविद्यालय के अनुवाधिकी एवं पौध प्रज्ञानविभाग के गेहूं अनुमान के वैज्ञानिक डॉ. जे.पी. बिजोई, डॉ. विकन शिंह, डॉ. एसके. सेरी, डॉ. एसएस. दाढ़ा, डॉ. दिव्या पोगट, डॉ. एमएस. बलात, डॉ. सोमवीर, डॉ. आईएस. पंवार, डॉ. एके. छाबड़ा, डॉ. योगेन्द्र कुमार, डॉ. केंद्रो. सहरावत, डॉ. मुकेश रौती, डॉ. रमेश कुमार, डॉ. कुष्ण कुमार, डॉ. वाईपीएस. सोलकी और डॉ. ए.ल.केशवर रेण्डी के अलावा डॉ. आरएस. थेन्वाल, डॉ. रेणु मुजाल, डॉ. भगत सिंह, डॉ. रमेश सांगवाल, डॉ. असएस. कंवर, डॉ. पियका, डॉ. राकेश पूर्विया, डॉ. मुकेश कुमारी, डॉ. बहीता व डॉ. हरिष्विद्वित का भी विशेष सहयोग रहा। यह किस्म 156 दिन तक पककर रैयर हो जाती है। इस किस्म ने प्रोटीन भी अन्य किस्मों की तुलना में अधिक है।

उत्तर भारत के मैदानी इलाकों के लिए तैयार की नई किस्म



गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उत्तर किस्म को भारत के उत्तर प्रदेश मैदानी इलाकों के लिए अनुमोदित किया गया है। इस क्षेत्र में प्रयोग हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा व उदयपुर क्षेत्र को छोड़कर), परियासी उत्तर प्रदेश (हासों क्षेत्र जो छोड़कर), जन्म-कश्मीर के कठुआ व जम्म जिले, हिमाचल प्रदेश के ऊजा जिला व पैटा घाटी और उत्तरखण्ड का तराई क्षेत्र पूर्ण रूप से लाभित है।

अगले वर्ष से होना चाहिए उपलब्ध। पादप एवं पौध प्रज्ञानविभाग के जद्युक्त डॉ. पर्क छाबड़ा ने कहा कि यही अंडमान के लिए उत्तर किस्म का लोरेन के लिए उत्तर किस्म की गई है। इन किस्म का लोरेन अगले वर्ष विज्ञान के लिए उत्तर करवा दिया जाएगा। यह किस्म किसानों के लिए उत्तरकाल साधित होगी।

वैज्ञानिकों वैज्ञानिकों का लोरेन कार्यिकारणीक : कुलपति पौध प्रज्ञानविभाग के जद्युक्त डॉ. पर्क छाबड़ा ने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने लोरेन बहुत ही कार्यिकारणीक है, जिसकी दबालत आज के दौरान लोरेन बहुत प्रदेश के प्रथम गुणवत्ता स्थान है औ गेहूं उत्तरकाल में देशभर में प्रदेश के प्रथम स्थान पर है।

विश्वविद्यालय द्वारा विकसित कृषि प्रबंध किसान कल्याण विभाग की फसल मानक, केन्द्रीय उप-समिति द्वारा नई बैठक में अधिसूचित व जारी कर



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

*द्यूनि कुनाहरण*

दिनांक 15.12.2021 पृष्ठ संख्या 4 कॉलम 2-8

# एचएयू ने विकसित की गेहूं की नई किस्म, अधिकतम पैदावार के साथ मिलेगी स्वादिष्ट चपाती



### इन विज्ञानियों की मेहनत लाई रंग

गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवाचितकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग के विज्ञानियों डॉ. आपी विश्वनाई, डॉ. विक्रम सिंह, डॉ. एसके सेठी, डॉ. परमेश दाइ, डॉ. दिया धोगा, डॉ. पमपस दलाल, डॉ. सोमरीनी, डॉ. आइएस पंडार, डॉ. एथे छबड़ा, डॉ. योगेंद्र कुमार, डॉ. कैटी सहरावत, डॉ. मुकेश सौरी, डॉ. रमेश कुमार, डॉ. कृष्ण कुमार, डॉ. वाईएस बोलेली, डॉ. ए. लोकेश्वर रेड्डी, डॉ. अरएस बैनवाल, डॉ. रनु मुजारां, डॉ. भावत विहार, डॉ. नरेंद्र सांगवान, डॉ. आरएस कवर, डॉ. प्रियका, डॉ. रावेश पुनिया, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ. निशा कुमारी, डॉ. बृहीता व डॉ. हरविंद्र सिंह का भी विशेष सहयोग रहा।

### उपलब्धि

- डब्ल्यूएच 1270 की अधिकतम पैदावार 91.5 विकल्प प्रीटे हेल्पर तक
- पीला रत्ना और भूत रत्ना रोगरोधी है गेहूं की खेत्रप्राप्ति

### इस किस्म की खुवियाँ

इस किस्म की खास बात यह है कि यह गेहूं की मुख्य बीमारियाँ जैला रत्ना व भूत रत्ना के प्रति रोकपड़ी हैं। इसके अलावा गेहूं के मुख्य क्षेत्रों में प्रवर्तित मुख्य बीमारियाँ जैसे पाता आमारी, सफद दूधी व पीजोया की कार्यालयी के प्रति भी रोकपड़ी हैं। यह किस्म 156 दिन तक पककर तैयार हो जाती है। इसकी असत क्षेत्र भी 100 सेटीमीटर तक होती है, जिसके कारण यह खेत में सिवायी नहीं। इस किस्म में प्रोटीन भी अच्युत किस्म की तुलना में अधिक है।

माझरण संगठनात, हिसार विश्वविद्यालय एचएयू कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के विज्ञानियों ने गेहूं को नई उन्नत किस्म (डब्ल्यूएच 1270) विकसित की है। इसकी विशेषता यह है कि यह अद्वितीय देगा और इसके आठ को विज्ञानियों भी स्वादिष्ट होगी। इस विश्वविद्यालय के अनुवाचितकों द्वारा प्रजनन विभाग के गेहूं अनुवाचितकों द्वारा विकसित किया गया है।

विकसन को लेकर जाल ही में भारत सरकार के कृषि एवं सहयोग विभाग की फसल मानक, अधिकारीय एवं अनुमोदन केंद्रीय उप समिति ने एवं देशी एवं विदेशी उत्तर भारत के कारण हरियाणा गेहूं के प्रति हेल्पर उत्पादन क्षमता में देशास्र में प्रथम स्थान पाया है। ऐसी ही नई-गेहूं की यह किस्म उत्तर भारत के मैदानी इलाकों के लिए की गई है विकसित गेहूं की यह किस्म को भारत के ऊपर-परिचय मैदानी इलाकों के लिए अनुमोदित किया गया है। इन क्षेत्रों में एजाव, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (लोटा व उदयगढ़ क्षेत्र को छोड़कर), पूर्वी उत्तर प्रदेश (झारखंड क्षेत्र को छोड़कर), जम्मू-कश्मीर के कुड़ियां व जम्मू किंवदन्ति, हिमाचल प्रदेश के ऊन जिला व पांडवा घाटी और उत्तराखण्ड का तराई क्षेत्र प्रमुख रूप से शामिल हैं।

नियमानुसार कर्ऱे विजाई तो मिलेगी अधिक पैदावार अनुसाधन निर्देशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि गेहूं की इस किस्म को अक्टूबर के अधिम सालाह में विजाई के लिए अनुमोदित किया गया है। अग्री विजाई कानूने पर इसकी पैदावार प्रीट 4 से 8 विवरत तक अधिक तो जा सकती है। इस किस्म में विश्वविद्यालय द्वारा की गई सिक्कारिशों के अनुसार विजाई करके उचित खाद, उर्दूक व पानी दिया जाए तो इसकी औसतन पैदावार 75.8 विवरत प्रति हेल्पर तक तो जाएगा। यह किस्म किसानों के लिए वरदान सावित होगी।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

यैनक भास्कर

दिनांक 15.12.2020 पृष्ठ संख्या..... 2 .....

कॉलम..... 3-6 .....

# एचएयू के वैज्ञानिकों ने गेहूं की उन्नत किस्म डब्ल्यूएच 1270 विकसित की, 91.5 विवंटल प्रति हेक्टेयर मिलेगी पैदावार

रबी के मौसम के लिए सिफारिश की गई, इस किस्म का बीज अगले वर्ष किसानों के लिए उपलब्ध होगा: डॉ. छाबड़ा

भास्कर न्यूज़ | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म विकसित की है। किसानों को 91.5 विवंटल प्रति हेक्टेयर तक की पैदावार मिल सकेगी। यही नहीं खाने भी स्वादिष्ट है। आज हरियाणा प्रदेश गेहूं के प्रति हेक्टेयर उत्पादन क्षमता में देशभर में प्रथम स्थान पर है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय की तरफ से विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' की ओर से नई दिल्ली में हाल ही में आयोजित बैठक में अधिसूचित ब जारी की है।



### जानिए... किन-किन वैज्ञानिकों की मेहनत रंग लाई

गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. ओपी बिश्नोई, डॉ. विक्रम सिंह, डॉ. एसके सेठी, डॉ. एसएस ढांडा, डॉ. दिव्या फोगट, डॉ. एमएस दलाल, डॉ. सोमवीर, डॉ. आईएस पंचर, डॉ. ए.के. छाबड़ा, डॉ. योगेंद्र कुमार, डॉ. केडी सहरावत, डॉ. मुकेश सैनी, डॉ. रमेश कुमार, डॉ. कृष्ण कुमार, डॉ. वाईपीएस सोलंकी और डॉ. ए.लोकेश्वर रेड्डी के अलावा डॉ. आर.एस. बेनीवाल, डॉ. रेनु मुंजाल, डॉ. भगत सिंह, डॉ. नरेश सांगवान, डॉ. आर.एस. कंवर, डॉ. प्रियंका, डॉ. राकेश पुनिया, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ. निशा कुमारी, डॉ. बबीता व डॉ. हरबिंद्र सिंह का भी विशेष सहयोग रहा।

प्रो. समर सिंह ने कहा- वैज्ञानिकों की मेहनत काबिलेतारीफ

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों की मेहनत बहुत ही काबिलेतारीफ है, जिनकी बदौलत आज केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का मुख्य स्थान है और गेहूं उत्पादन में देशभर में प्रथम स्थान पर है। पादप एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एके छाबड़ा ने बताया कि रबी के मौसम के लिए सिफारिश की गई इस किस्म का बीज अगले वर्ष किसानों के लिए उपलब्ध करवा दिया जाएगा। यह किस्म किसानों के लिए वरदान साबित होगी।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... अमर उजाला

दिनांक 15.12.2020 पृष्ठ संख्या 2 कॉलम 3-6

### कामयादी

एचएयू के वैज्ञानिकों ने गेहूं की उन्नत किस्म की विकसित, खाने में भी स्वादिष्ट

## डब्ल्यूएच 1270 गेहूं से मिलेगी बेहतर पैदावार

अमर उजाला ब्लूग

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म विकसित की है। आज हरियाणा प्रदेश गेहूं की प्रति हेक्टेयर उत्पादन क्षमता में देशभर में प्रथम स्थान पर है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है।

विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उपसमिति द्वारा नई दिल्ली में हाल ही में आयोजित बैठक में अधिसूचित और जारी कर दिया गया है।

गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के लिए अनुमोदित किया



दिनांक। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह के साथ वैज्ञानिकों की टीम। - अमर उजाला

गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. ओपी विस्तोई, डॉ. विक्रम सिंह, डॉ. एसके. सेठी, डॉ. एसएस ढांडा, डॉ. दिव्या फोगाट, डॉ. एमएस दलाल, डॉ. सोमवीर, डॉ. आईएस पंवार, डॉ. एके छावड़ा, डॉ. योगेंद्र कुमार, डॉ. कृष्ण कुमार, डॉ. वाईपीएस सोलंकी और डॉ. प. लोकेश्वर रेड्डी के अलावा डॉ. आरएस बेनेवाल, डॉ. रेणु मुजाल, डॉ. भगत सिंह, डॉ. नरेश साधावाल, डॉ. आरएस कंवर, डॉ. पिंका, डॉ. राकेश पुनियां, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ. निशा कुमारी, डॉ. बच्चीता और डॉ. हर्षविंद्र सिंह का भी विशेष सहयोग रहा।

गया है। इन क्षेत्रों में पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा व उदयपुर क्षेत्र को छोड़कर), पश्चिमी उत्तर प्रदेश (झांसी क्षेत्र को छोड़कर), जम्मू-कश्मीर के कतुआ व जम्मू जिले, हिमाचल प्रदेश के ऊना जिला व पौटा घाटी और उत्तराखण्ड का तराई क्षेत्र प्रमुख रूप से शामिल हैं। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके

सहरावत ने बताया कि गेहूं की इस किस्म को अक्तूबर के अंतिम सप्ताह में बिजाई के लिए अनुमोदित किया गया है।

पादप एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एके छावड़ा ने बताया कि रबी के मौसम के लिए सिफारिश की गई इस किस्म का बीज अगले वर्ष किसानों के लिए उपलब्ध करवा दिया जाएगा। वहीं विश्वविद्यालय के

### 75.8 विं प्रति हेक्टेयर पैदावार

इस किस्म में विश्वविद्यालय द्वारा की गई सिफारिशों के अनुसार बिजाई करके उचित खेद उर्वरक व पानी दिया जाता तो इसकी असतत पैदावार 75.8 विंटेल प्रति हेक्टेयर हो सकती है और अधिकतम पैदावार 91.5 विंटेल प्रति हेक्टेयर तक रही जा सकती है। इस किस्म की खास बात यह है कि गेहूं की मुख्य जीमरियां पीला रत्वा व भूंग रत्वा के प्रति रोगरोपी है। यह किस्म 156 दिन तक पककर तैयार हो जाती है। इसकी असत ऊचाई भी 100 सेंटीमीटर तक होती है, जिसके कारण यह खेत में गिरती नहीं। इस किस्म में प्रोटीन भी अन्य किसी की तुलना में अधिक है।

कुलपति प्रो. समर सिंह ने वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्ध पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों की मेहनत काबिले तारीफ है, जिनकी बदौलत आज केंद्रीय खाद्यान्न भंडारण में प्रदेश का मुख्य स्थान है और गेहूं उत्पादन में देशभर में प्रथम स्थान पर है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

योनक सैरा

दिनांक १५. १२. २०२० पृष्ठ संख्या.....। कॉलम.....।-५

## हकूमि के वैज्ञानिकों ने गेहूं की पैदावर में उन्नत किस्म की तैयार

● अधिकतम पैदावार 91.5 किंटल प्रति हैक्टेयर तक, खाने में भी स्वादिष्ट

हिसार, 14 दिसंबर (सुरेंद्र सोढ़ी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की मेहनत की बदौलत एक ओर उपलब्ध विश्वविद्यालय ने अपने नाम कर ली है। अब वैज्ञानिकों ने गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उत्तर किस्म विकसित की है। यह वैज्ञानिकों की मेहनत का ही परिणाम है कि हरियाणा

+ प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से अन्य प्रदेशों की तुलना में बहुत ही छोटा है जबकि देश के केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का कुल भण्डारण का 16 प्रतिशत हिस्सा है और फसल उत्पादन में अग्रणी प्रदेशों में है, जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। आज हरियाणा प्रदेश गेहूं के प्रति हेक्टेयर उत्पादन क्षमता में देशभर में प्रथम स्थान पर है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवाशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है।

व जारी कर दिया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों की मेहनत बहुत ही काबिलेतारिफ है, जिनकी बदौलत आज केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का मुख्य स्थान है और गेहूं उत्पादन में देशभर में प्रथम स्थान पर है। पादप एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छावड़ा ने बताया कि रबी के मौसम के लिए



गेहूं की किस्म का फाइल फोटो।

### उत्तर भारत के मैदानी इलाकों के लिए की गई विकसित

गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उत्तर किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के लिए अनुमंदित किया गया है। इन क्षेत्रों में फंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा व उत्तरप्रदेश को छोड़कर), पश्चिमी उत्तर प्रदेश (झांसी क्षेत्र को छोड़कर), जम्मू-कश्मीर के कुरुआ व जम्मू जिले, हिमाचल प्रदेश के ऊना जिला व पैंटा घाटी और उत्तराखण्ड का तराई क्षेत्र प्रमुख रूप से शामिल हैं।

व जारी कर दिया गया है।

सिफारिश की गई इस किस्म का बीज अगले वर्ष किसानों के लिए उपलब्ध करवा दिया जाएगा। यह किस्म किसानों के लिए वरदान साबित होगी।

**सिफारिश अनुसार बिजाई करने पर मिलती है अधिक पैदावार :** डा. एस.के. सहरावत

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि गेहूं की इस किस्म को अकूबर के अंतिम सप्ताह में बिजाई के लिए अनुमोदित किया गया है। अगली बीजाई के लिए गेहूं की मुख्य विमरियां पीला रत्तवा व भूरा रत्तवा के प्रति रोगरोधी हैं। इसके अलावा गेहूं

### इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग

गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उत्तर किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवाशकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. ओ.पी. विश्वनाई, डॉ. विक्रम सिंह, डॉ. एस.के. सेठी, डॉ. एस.एस. ढाँडा, डॉ. दिव्या फोगाट, डॉ. एम.एस. दलाल, डॉ. सोमवीर, डॉ. आई.एस. यंवार, डॉ. ए.के. छावड़ा, डॉ. योगेंद्र कुमार, डॉ. के. सहरावत, डॉ. मुकेश सेनी, डॉ. रमेश कुमार, डॉ. कृष्ण कुमार, डॉ. वाइ.पी.एस. सोलका और डॉ. ए.लोकेश्वर रंझौ के अलावा डॉ. आर.एस. बेनोजाल, डॉ. रेन मंजुल, डॉ. भगत सिंह, डॉ. नरेश सोणवान, डॉ. आर.एस. कंवर, डॉ. प्रियका, डॉ. राकेश पुनिना, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ. निशा कुमारी, डॉ. बबीता व डॉ. लक्ष्मिंद्र सिंह का भी विशेष सहयोग रहा।

प्रमुख क्षेत्रों में प्रचलित मुख्य विमरियां जैसे पत्ता अंगमारी, सफेद चुणी व पत्तियों की कांथिरी के प्रति भी रोगरोधी हैं। यह किस्म 156 दिन तक पककर तैयार हो जाती है और इसकी औसत ऊंचाई भी 100 सेंटीमीटर तक होती है, जिसके कारण यह खेत में गिरती नहीं। इस किस्म में प्रोटीन भी अन्य किस्मों की तुलना में अधिक है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....भूजन कृषि भूजन  
दिनांक 15.12.2020 पृष्ठ संख्या.....8 कॉलम.....4-5

### हकूमि वैज्ञानिकों ने विकसित की डब्ल्यूएच 1270 गेहूं की किस्म

हिसार, 14 दिसंबर (निस)



हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकूमि) के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 किस्म विकसित की है। वैज्ञानिकों का दावा है कि यह किस्म उत्तर भारत के अनन्दाताओं को मालामाल करेगी। इस किस्म को केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नवी दिल्ली में हाल ही में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है।

गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के लिए अनुमोदित किया गया है। इन क्षेत्रों में पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा व उदयपुर क्षेत्र को छोड़कर), पश्चिमी उत्तर प्रदेश (झांसी क्षेत्र को छोड़कर), जम्मू-कश्मीर के कटुआ व जम्मू जिले, हिमाचल प्रदेश के ऊना जिला व पाँच घाटी और उत्तराखण्ड का

हकूमि के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 गेहूं की फसल। विस

तराई क्षेत्र प्रमुख रूप से शामिल हैं।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि गेहूं की इस किस्म को अक्तूबर के अंतिम सप्ताह में बिजाई के लिए अनुमोदित किया गया है। अग्री बिजाई करने पर इसकी पैदावार प्रति एकड़ 4 से 8 किवंटल तक अधिक ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि इस किस्म में विश्वविद्यालय द्वारा की गई सिफारिशों के अनुसार बिजाई करके उचित खाद, उर्वरक व पानी दिया जाए तो इसकी औसतन पैदावार 75.8 किवंटल प्रति हेक्टेयर हो सकती है और अधिकतम पैदावार 91.5 किवंटल प्रति हेक्टेयर तक ली जा सकती है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....प्रांतीकैसरी.....  
दिनांक 15.12.2020 पृष्ठ संख्या.....3.....कॉलम.....4-8.....

### 'ए.ए.यू.वैज्ञानिकों ने अधिक पैदावार देने वाली गेहूं की उन्नत किस्म डब्ल्यू.एच. 1270 विकसित की'

हिसार, 14 दिसम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की मेहनत की बदौलत एक ओर उपलब्ध विश्वविद्यालय ने अपने नाम कर ली है। अब वैज्ञानिकों ने गेहूं की डब्ल्यू.एच. 1270 उन्नत किस्म विकसित की है।

विश्वविद्यालय के अनुसार गेहूं की डब्ल्यू.एच. 1270 इस किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के लिए

अनुमोदित किया गया है। इन क्षेत्रों में पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, गज़स्थान (कोटा व उदयपुर क्षेत्र को छोड़कर), पश्चिमी उत्तर प्रदेश (झांसी क्षेत्र को छोड़कर), जम्मू-कश्मीर के कटुआ व जम्मू जिले, हिमाचल प्रदेश के ऊना जिला



व पौंछ घाटी और उत्तराखण्ड का तराई क्षेत्र प्रमुख रूप से शामिल हैं। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डा. एस.के. सहरावत ने बताया कि इस किस्म में विश्वविद्यालय द्वारा की गई सिफारिशों के अनुसार बिजाई करके उचित खाद, उर्वरक व पानी दिया जाए तो इसकी औसतन पैदावार 75.8 विवंटल प्रति हैक्टेयर हो सकती है और अधिकतम पैदावार 91.5

विवंटल प्रति हैक्टेयर तक ली जा सकती है। इस किस्म की खास बात यह है कि यह गेहूं की मुख्य बीमारियां पीला रत्तवा व भूरा रत्तवा के प्रति रोगरोधी है।

इसके अलावा गेहूं के प्रमुख क्षेत्रों में प्रचलित मुख्य बीमारियां जैसे पत्ता अंगमारी, सफेद चूर्णी व पत्तियों की कांथियारी के प्रति भी रोगरोधी हैं। यह किस्म 156 दिन तक पककर तैयार हो जाती है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... भ.भ. ३४२

दिनांक ।.५।।२।।२०२० पृष्ठ संख्या । कॉलम ।

### हकृवि वैज्ञानिकों ने विकसित की गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म

हिसार/ 14 दिसंबर, रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की मेहनत की बदौलत एक और उपलब्धि विश्वविद्यालय ने अपने नाम कर ली है। अब वैज्ञानिकों ने गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म विकसित की है। यह वैज्ञानिकों की मेहनत का ही परिणाम है कि हरियाणा प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से अन्य प्रदेशों की तुलना में बहुत ही छोटा है जबकि देश के केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का कुल भण्डारण का 16 प्रतिशत हिस्सा है और फसल उत्पादन में अप्रणी प्रदेशों में है, जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। आज हरियाणा प्रदेश गेहूं के प्रति हैक्टेयर उत्पादन क्षमता में देश भर में प्रथम स्थान पर है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी प्रौद्योगिकी के अनुभाग के गेहूं अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. ओपी विश्नोई, डॉ. विक्रम करके उचित खाद, उर्वरक व पानी दिया गया है। गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के लिए अनुमोदित किया गया है। इन क्षेत्रों में पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा व उदयपुर क्षेत्र को छोड़कर), पश्चिमी उत्तर प्रदेश (झांसी क्षेत्र को छोड़कर), जम्मू-कश्मीर के कटुआ व जम्मू जिले, हिमाचल प्रदेश के ऊना जिला व पौटा घाटी और उत्तराखण्ड का तराई क्षेत्र प्रमुख रूप से शामिल हैं।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि गेहूं की इस किस्म को अक्टूबर के अंतिम सप्ताह में विजाई के लिए अनुमोदित किया गया है। अगली विजाई करने पर इसकी पैदावार प्रति एकड़ 4 से 8 विवर्टल तक अधिक ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि इस किस्म में विश्वविद्यालय द्वारा की गई सिफारिशों के अनुसार विजाई के अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. ओपी विश्नोई, डॉ. विक्रम सिंह, डॉ. एसके संठी, डॉ. एसएस ढांडा, डॉ. दिव्या फोगाट, डॉ. एमएस दलाल, डॉ. सोमवीर, डॉ. आईएस पंवार, डॉ. एके छावड़ा, डॉ. योगेंद्र कुमार, डॉ. केडी सहरावत, डॉ. मुकेश सैनी, डॉ. रमेश कुमार, डॉ. कृष्ण कुमार, डॉ. वाईपीएस सोलंकी और डॉ. एलोकेश्वर रेडी के अलावा डॉ. आरएस बेनीवाल, डॉ. रेनू मुंजाल, डॉ. भगत सिंह, डॉ. नरेश सोंगवान, डॉ. आरएस कंवर, डॉ. प्रियका, डॉ. राकेश पुनियां, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ. निशा कुमारी, डॉ. बबीता व डॉ. हरविंद्र सिंह का भी विशेष सहयोग रहा।





## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

सिंही पत्र

दिनांक 15.12.2020 पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

**उपलब्धि** अधिकतम पैदावार 91.5 किवंटल प्रति हेक्टेयर तक, खाने में भी स्वादिष्ट

# एचएयू वैज्ञानिकों ने अधिक पैदावार देने वाली गेहूं की उन्नत किस्म डब्ल्यूएच 1270 विकसित की

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। वैज्ञानिकों की मेहनत की बदौलत पक और उपलब्धि विश्वविद्यालय ने अपने नाम कर ली है। अब वैज्ञानिकों ने गेहूं को डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म विकसित की है। यह वैज्ञानिकों की मेहनत की ही परिणाम है कि हरियाणा प्रदेश क्षेत्रफल की दुष्टि से अब प्रदेशों की तुलना में बहुत ज़्यादा है जबकि देश के केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का कुल भण्डारण का 16 प्रतिशत हिस्सा है और प्रदेश उत्पादन में अग्रणी प्रदेशों में है, जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवासिकों एवं पीढ़ी प्रजनन विभाग के गेहूं अनुवास द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं विभान कर्तव्यान्वयन मंत्रालय के कृषि एवं संरक्षण विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-संचित' द्वारा नई दिल्ली में हाल ही में अत्योजित केंद्र में अधिसूचित या जारी का दिया गया है।

उत्तर भारत के मैदानी झुलाकों के



हिसार। कुलपति सम्पर्क सिंह के साथ गेहूं को उन्नत किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों को टीम के सदरय

लिए की गई है विकसित गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी झुलाकों के लिए अनुमोदित किया गया है। इन खेतों में पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा व उदयपुर क्षेत्र का छोड़कर), पश्चिमी उत्तर प्रदेश (झारखंड का छोड़कर), जम्मू-कश्मीर के कतुआ व जम्मू विलो, उत्तराखण्ड प्रदेश के कुना जिला व पीटा जाटी और उत्तराखण्ड का तराई क्षेत्र प्रमुख रूप से शामिल हैं।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान

मिंदेशक डॉ. एस.बै. सहरावत ने अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. ओ.पी. शिरोडे, डॉ. विक्रम सिंह, डॉ. एस.के. मंतो, डॉ. एस.एस. दावा, डॉ. विक्का फोगट, डॉ. एम.एम. दलाल, डॉ. संगमवीर, डॉ. आई.एस. फौरार, डॉ. ए.के. छबड़ा, डॉ. योगेंद्र कुमार, डॉ. के.टी. महरावत, डॉ. युकेश संगो, डॉ. मणि कुमार, डॉ. कृष्ण कुमार, डॉ. चाहू.पी.एस. सालंकी और डॉ. ए.लोकेश्वर रहड़ी के अलेक्जा डॉ. आर.एस. चंद्रशेखर, डॉ. रेनू मुजाल, डॉ. भगवन सिंह, डॉ. नरेश सामवान, डॉ. आर.एस. कंवर, डॉ. विक्रम, डॉ. रकेश पुर्णपा, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ. निशा कुमारी, डॉ. बर्थोत व

अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. ओ.पी. शिरोडे, डॉ. विक्रम सिंह, डॉ. एस.के. मंतो, डॉ. एस.एस. दावा, डॉ. विक्का फोगट, डॉ. एम.एम. दलाल, डॉ. संगमवीर, डॉ. आई.एस. फौरार, डॉ. ए.के. छबड़ा, डॉ. योगेंद्र कुमार, डॉ. के.टी. महरावत, डॉ. युकेश संगो, डॉ. मणि कुमार, डॉ. कृष्ण कुमार, डॉ. चाहू.पी.एस. सालंकी और डॉ. ए.लोकेश्वर रहड़ी के अलेक्जा डॉ. आर.एस. चंद्रशेखर, डॉ. रेनू मुजाल, डॉ. भगवन सिंह, डॉ. नरेश सामवान, डॉ. आर.एस. कंवर, डॉ. विक्रम, डॉ. रकेश पुर्णपा, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ. निशा कुमारी, डॉ. बर्थोत व

गेहूं को किस्म का फाइल फॉर्म। डॉ. हर्यंकद सिंह का भी विशेष सहयोग रहा। कुलपति प्रोफेसर सम्पर्क सिंह ने

अगले वर्ष से होगा वीज  
उपलब्धि : डॉ. ए.के. छावड़ा

पात्र एवं पीढ़ी प्राज्ञन विज्ञान के विभागाधारक डॉ. ए.के. छावड़ा जे दत्तव्य कि टीपी के लिए लिपारिटा यी गई उत्तराखण्ड का वीज अगले वर्ष विज्ञानों के लिए उत्तराखण्ड दिया जाएगा। यह किरण विज्ञानों के लिए उत्तराखण्ड सामिल होगी।

वैज्ञानिकों द्वारा इन उपलब्धि पर व्यापार दो और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आश्वान किया।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... प्रभु कृष्ण

दिनांक १५.१२.२०२० पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

### एचाएयू वैज्ञानिकों ने अधिक पैदावार देने वाली गेहूं की उन्नत किस्म डब्ल्यूएच 1270 विकसित की



#### पाठकपक्ष न्यूज़

हिसार, 14 दिसम्बर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की मेहनत की बदौलत एक ओर उपलब्धि विश्वविद्यालय ने अपने नाम कर ली है। अब वैज्ञानिकों ने गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म विकसित की है। यह वैज्ञानिकों की मेहनत का ही परिणाम है कि हरियाणा प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से अन्य प्रदेशों की तुलना में बहुत ही छोटा है जबकि देश के केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का कुल भण्डारण का 16 प्रतिशत हिस्सा है और फसल उत्पादन में अग्रणी प्रदेशों में है, जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। आज हरियाणा प्रदेश गेहूं के प्रति हेक्टेयर उत्पादन क्षमता में देशभर में प्रथम स्थान पर है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुबांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुपोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में हाल ही में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म को विश्वविद्यालय के अनुबांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग



के वैज्ञानिक डॉ. ओ.पी. विश्वनोई, डॉ. विक्रम सिंह, डॉ. एस.के. सेठी, डॉ. एस.एस. ढांडा, डॉ. दिव्या फोगाट, डॉ. एम.एस. दलाल, डॉ. सोमवीर, डॉ. आई.एस. पंवार, डॉ. ए.के. छाबड़ा, डॉ. योगेंद्र कुमार, डॉ. के.डी. सहरावत, डॉ. मुकेश सैनी, डॉ. रमेश कुमार, डॉ. कृष्ण कुमार, डॉ. वाई.पी.एस. सोलंकी और डॉ. ए.लोकेश्वर रेड्डी के अलावा डॉ. आर.एस. बेनीवाल, डॉ. रेनू मुंजाल, डॉ. आर.एस. कंवर, डॉ. प्रियंका, डॉ. राकेश पूनिया, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ. निशा कुमारी, डॉ. बबीता व डॉ. हरविंद्र सिंह का भी विशेष सहयोग रहा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों की मेहनत बहुत ही काबिलेतारिक है, जिनकी बदौलत आज केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का मुख्य स्थान है और गेहूं उत्पादन में देशभर में प्रथम स्थान पर है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

समाचार ६५४

दिनांक १५.१२.२०२२ पृष्ठ संख्या..... — कॉलम..... —

## हकृति ने गेहूं की डब्ल्यूएच-1270 किस्म विकसित की

अधिकतम पैदावार  
91.5 किंटल प्रति  
हेक्टेयर तक, खाने में  
भी स्वादिष्ट

महसूस हरियाणा न्यूज़  
हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को मेहनत की बरोबरी एक आगे उत्तराधिक विश्वविद्यालय ने अपने नाम कर ली है। अब वैज्ञानिकों ने गेहूं की डब्ल्यूएच-1270 उत्तम किस्म विकसित की है।

यह वैज्ञानिकों को मेहनत का ही परिणाम है कि हरियाणा प्रदेश खेतीकरण की शृंखि से अब पर्यायों की तुलना में बहुत ही छोटा है जबकि देश के केंद्रीय खाद्यान भवित्वात् में बदल का कूल भवित्वात् का 16 प्रतिशत हिस्सा है और फगल उत्पादन में अग्रणी पर्यायों में है, जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। अब हरियाणा प्रदेश गेहूं के प्रति हेक्टेयर उत्पादन लगाता है देशभर में प्रथम स्थान पर है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुसारियों एवं पैदावर प्रबन्धन विभाग के गेहूं अनुसार द्वारा



सिफारिश अनुसार विजाई करने पर मिलती है

अधिक पैदावार : डॉ. एस.के. सहरावत

विश्वविद्यालय के अनुसारण निवेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि गेहूं को इस किस्म को अकृत्य के अंतिम स्तर में विजाई के लिए अनुमति दिया गया है। अंगीरी विजाई करने पर इसको पैदावार प्रति एकड़ ५ से ४ किंटल तक अधिक सौ जा सकती है। उन्होंने बताया कि इस किस्म में विश्वविद्यालय द्वारा कोई सिफारिशों के अनुसार विजाई करके उत्तम खाद्य, उत्तरक लगानी की गयी अनुसन्धान पैदावार 91.5 किंटल प्रति हेक्टेयर तक भी ज्ञाती है और अधिकतम पैदावार 91.5 किंटल प्रति हेक्टेयर तक भी ज्ञाती है। इस किस्म की शाक जात यह है कि यह गेहूं की मुख्य विधायां पौला लकड़ा व धूप लकड़ा के प्रति रोगीरोगी है। इसके अलावा गेहूं के प्रमुख धोजों में प्रवर्णित मुख्य विधायां जैसे चान अमरी, संबंध चुनी व चूनी जैसी कौरियारी के प्रति भी रोगीरोगी हैं। यह किस्म 156 दिन तक पककर रुकाव हो जाती है और इसकी औसत उंचाई भी 100 सेंटीमीटर तक होती है, जिसके कारण यह सेत में गिरती नहीं। किस्म में शोटीनी भी अब किसी को तुलना में अधिक है।

विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय 'फसल मानक, अधिमूलना एवं अनुसारण द्वारा विकसित इस किस्म को भारत केंद्रीय उत्तर-समिति' द्वारा नई दिल्ली में हाल मरकार के कृषि एवं किस्मन कल्याण त्री में आयोजित बैठक में अधिव्यक्त व मंजूलय के कृषि एवं सहायग विभाग को जारी कर दिया गया है।

इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाइ रंग

गेहूं की डब्ल्यूएच-1270 उत्तम किस्म को विश्वविद्यालय के अनुसारियों एवं पैदावर प्रबन्धन विभाग के गेहूं अनुसारण के वैज्ञानिक डॉ. ओ. पी. विस्मोहन, डॉ. विक्रम सिंह, डॉ. एस.के. सेठी, डॉ. एस. दांडा, डॉ. दिव्या खोगांड, डॉ. एस.एस. दलाल, डॉ. सोनीवीर, डॉ. आई.एस. पंडित, डॉ. ए.के. लकड़ा, डॉ. योगेंद्र कृष्ण, डॉ. के.सी. महरावत, डॉ. मुकेश मेही, डॉ. संश. जूरार, डॉ. चाहूर.पी.एस. बोलेंको और डॉ. ए.लोकेश रेणू के अलावा डॉ. आर.एस. बोलेंको, डॉ. नेनू मंजूल, डॉ. भगत सिंह, डॉ. रमेश सांख्यन, डॉ. आर.एस. कंवर, डॉ. प्रियका, डॉ. गरका पूर्णय, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ. निशा कुमारी, डॉ. बब्ली तथा डॉ. हर्षविंद सिंह का भी विशेष सहाय्य रहा।

अगले वर्ष से होगा बीज उपलब्ध : डॉ. छाबड़ा

पादप एवं पौध प्रबन्धन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने जाता कि यही के मौसम के लिए सिफारिश को गांव इस किस्म का बीज अगले वर्ष किसीने के लिए उपलब्ध कराया दिया जाएगा। यह किस्म किसीने के लिए बरदान मार्कित होगी।

वैज्ञानिकों की मेहनत काविलेतारिफ़ : प्रो. समर सिंह

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने वैज्ञानिकों द्वारा इस उत्तराधिक पर बढ़ाव दी और विविध में भी निवेश प्रयासमत रखने का आदेश दिया। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों की मेहनत अहूल ही काविलेतारिफ़ है, जिनके यदीलत आज केंद्रीय खाद्यान भागीदार में प्रदेश का मुख्य स्थान है और गेहूं उत्पादन में देशभर में प्रधान स्थान पर है।

गेहूं की डब्ल्यूएच-1270 उत्तम किस्म छोड़कर, पांडामी ऊपर प्रदेश (झारी क्षेत्र) को भाग के ऊपर प्रदेश में देशभर में देशभर को छोड़कर), झारी क्षेत्र के ऊपर के लिए अनुमति दिया गया है। इन क्षेत्रों जम्मू कश्मीर, तिमाचू प्रदेश के ऊपर जिता में पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, व पौटा चारी और उत्तराखण्ड का तराई गढ़वाल(कोटा व उदयपुर लेव को लेव प्रमुख क्षेत्र में ग्रामिन है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार  
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... उत्तराभास  
दिनांक १५.१२.२०२० पृष्ठ संख्या १ कॉलम १

एचएयू वैज्ञानिकों ने अधिक पैदावार देने वाली गेहूं की किसी डब्ल्यूएच 1270 विकसित की

સાધુવાર્ગ નદું

**हिमारा** हारयाणा कृषि विभागितालय के वैज्ञानिकों ने मेहनत की बदौलत एक और उत्तमविधि विभागितालय ने अपने नाम की है। अब वैज्ञानिकों ने गेहू की ड्रग्युरेशन-1270 जलत किस्म विकसित की है। आज हारयाणा प्रदेश गेहू के प्रति हेतु देशवर उत्तरांशन धमता में देशर में प्रथम स्थान पर है। इस किस्म को विभागितालय के अनुवाईकों द्वारा प्रजनन विधान के गेहू अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है विभागितालय द्वारा विकसित इस

यह वैद्यनानिकों की भेदभाव का ही परिणाम है कि हरियाणा प्रदेश सेवकलन की दृष्टि में अन्य प्रदेशों की तुलना में ज्ञात ही खोला है जबकि देश के केंद्रीय राज्यों व भारतगण में प्रदेश का कृत भारतण का 16 प्रतिलिपि दिस्या है और फसल उत्पादन में अप्राप्ति प्रदेशों में है, जो किसम को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं मध्योग विभाग की 'फसल मानक' अधिकृत्यन्वयन एवं अनुमोदन कंट्रीट्री डॉ-समिति' द्वारा नई टिक्की में हाल ही में आयोजित दैत्यक में अधिकृति व जारी किया गया है।

1

उत्तर भारत के मैदानी इलाकों के लिए की गई है विकसित मैट्री की अवधिपूर्ण-1270 उपर्युक्त विकास की भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के लिए अनुमतिप्राप्त किया गया है। इन सेटों में पराल, दिवियाला, दिल्ली, राजस्थान-गोदान औ उत्तराखण्ड की प्रांत (27), पश्चिमी उत्तर प्रदेश की झज्जी की प्रांत (27), उत्तम-खण्डप्रांत की झज्जी व अमृत विकास विभाग प्रांतों की कुल विकास व पौष्टि पार्टी और उत्तराखण्ड का तरांग द्वारा प्रमुख रूप से समर्थित है।

सिफारिश अनुसार बिजाई करने पर मिलती है अधिक पैदावार : डॉ. सहयोगी

विश्वविद्यालय के अनुसाधान निदेशक डॉ. एस.सी. सहारादत ने बताया कि गेहूं की इस किस्म को अल्टूबर के अन्तर्गत रासायन में जिजाई के लिए एक अनुमोदित किया गया। अग्रेंज जिजाई करने पर छात्रावार प्रतिवर्ष एकड़ 4 से 8 किलोट तक अधिक ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि इस किस्म में विश्वविद्यालय द्वारा की गई शिकायितों के अनुसार जिजाई करके ठांचत खाद, उत्तरवर क या पानी दिया जाए तो इसकी औसतत ऐदावर 75.8 किलोट प्रति हेक्टेएर तक हो सकती है और अधिकतम ऐदावर 91.5 किलोट प्रति हेक्टेएर तक ली जा सकती है। इस किस्म की खास बात यह है कि यह गेहूं की मुख्य विद्यमारिया पीली रसायन व भूरा रसायन के द्वारा रोगरोती है। इसके अलावा गेहूं के द्व्युषक क्षेत्रों में प्रवर्तित मुख्य विद्यमारिया जैसे पत्ता अंगमारी, सफेद तुर्पी व पत्तियों की कार्मियारी के प्रति भी रोगरोती है। यह किरम 156 दिन तक एककर तेलर हो जाती है और जास्तीकी औसत ऊचाई भी 100 सेटीमीटर तक होती है।

**इनकी महनत लाई रंग**  
 शेर की छात्यरुद- 1270 उक्त किसम  
 को दिव्यविजयतय के अनुभवानी एवं  
 वैष्णवतमन के गुरु अनुभव के  
 देशप्रभानी हो, ओ मी, विनानी, हो, विनानी  
 रिति, हो, एकसे सेनी, हो, एसरव दाता,  
 हो, दिया एसेमट, हो, एस्मस दालत,  
 हो, लोमधीर, हो, आज्ञाप्रवाह, हो,  
 एक सारांश, हो, योगद दामर, हो, कठी  
 सहारान, हो, मुकुट सेनी, हो, कुमार  
 कुमार, हो, कुमा कुमार, हो, वार्षीकरण  
 सरलती और हो, एलीकेश्वर रहो के  
 अलावा हो, आर एस, बैलीन, हो, रेन  
 मुनाजा, हो, भ्रमत रिति, हो, नरेश  
 सगवान, हो, आसरान चाकर, हो,  
 प्रियांका, हो, रामेश्वरा प्रिया, हो, मुकुटा  
 तुमर, तिनिहां तुमरी, हो, बैलीन व  
 हो, हार्षिक रिति का विशेष सद्योग रहा



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

## लोक संपर्क कार्यालय

## समाचार पत्र का नाम.

~~पांच बड़ी~~

दिनांक १५.१२.२०२० पृष्ठ संख्या १ कॉलम १

अधिकतम पैदावार 91.5 किंवंटल प्रति हेक्टेयर तक, खाने में भी स्थादिष्ट

एचएयू वैज्ञानिकों ने अधिक पैदावार देने वाली गेहूं की उन्नत किस्म डब्ल्यूएच 1270 विकसित की

पांच वर्षों तक

हिंसा। योगी-राजनीति सिंह हारयामा की प्रतिवर्तीविद्यालय के वैज्ञानिकों की महान तकी बढ़तीरुपी एक और उपर्युक्त विश्वविद्यालय में अपने मास बतल ली गई। अब वैज्ञानिकों को मैंने मैंने ही डक्टर्स्पूर्च 1270 अंत किसमि विज्ञानिकों को है। यह वैज्ञानिकों को महानांग का ही पार्श्वाभास करने की विश्वविद्यालय प्रदेश एवं ब्रह्मगंगा के द्वारा देखा गया था अब योगी-राजनीति की स्थापना में बहुत ही दृढ़ा है अब वह देश के केंद्रीय स्थापनाएँ भारतीयण में प्रदेश का कुल भारतीयण का 16 प्रतिशत विद्यालय है और प्रदेश उत्तराखण में अपनी प्रत्येक में है, जो उपर्युक्त अंत में बहुत बड़ी उपलब्ध है। अब हारयामा देश मैंने प्रथम विद्यालय उत्तराखण में देशपाल में प्रथम विद्यालय यह है। इस किसिम की विश्वविद्यालय के अनुवाचिकों एवं योगी-राजनीति विद्यालय के गह अन्युपाय द्वारा विश्वविद्यालय विद्यालय यह है। विश्वविद्यालय विद्यालय यह विद्यालय इस किसिम को भारत सरकार के कुर्ती एवं विद्यालय कार्यालय भवितव्य के कुर्ती एवं विद्यालय विद्यालय को प्रदान करना, अंतिमत्वा एवं अंग्रेजों के केंद्रीय उत्तराखण में देशपाल द्वारा नई विद्यालय में डाल ही

दिया गया है। उत्तर भारत के प्रैदेशिक इलाकों से लिए की गई है विवरित है। गढ़ जो डिल्लीपुर 1270 उत्तर किलोमीटर की दूरी के उत्तर-पश्चिम मण्डलों इलाकों में लिए अनुसूचित किया गया है। इन छंडों में पञ्चाणी, हार्याचाल, दिल्ली, राष्ट्रव्यापार (कोटा) व उदयगढ़ खंडों को छोड़कर, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, जाहांगीर खंड को छोड़कर, उत्तर कर्नाटक के कन्नूरा य अम्बुजिल, दिल्लीपुर प्रदेश के ऊना जिला व पंथा पाटी और उत्तराखण्ड का सराई खंड प्रध्याय खंड में सम्पूर्ण है।

विवरित अन्नसाम बिनाई करने पर

**महाराष्ट्र** विद्युतीयता के अनुसंधान निदेशालय द्वारा एस.के. महाराष्ट्र ने बताया कि गोदू के इस किसिम के अवधारणा के अंतर्गत महाराष्ट्र में विजिओं के लिए अनुमति दिया गया है। अतः विजिओं करने पर इसको प्रैदाया या प्रैफॉल के 4 से 8 किलोटन तक अधिक लीज़ रकम दी जाती है। इनको बताया गया है कि इस किसिम में विद्युतीयता द्वारा की गई विद्युतीयता के अनुसार विजिओं करने की विधि सहित, उत्तराखण्ड व यारी दिया जाए, तो इसकी औंसता पैदेशकर 75.8 किलोटन प्रति हेक्टेएक्टर हो जाएगी और अंतर्गत में पैदेशकर 91.5 किलोटन प्रति हेक्टेएक्टर तक ली जा पकड़े जाएं।

की मुख्य विभागियों पौला रत्नवा व भग्ना रत्नवा के प्रति रोगरोधी हैं। इसके अलावा महें के प्रमुख लेज़े भी मेरे प्रचलित मुख्य विभागियों में से एक अंगमारी, मनकेद चुनी व परिस्थि की कांगियारी के प्रति भी

मुकेश सेरें, डॉ. रमेश कुमार, डॉ. कृष्ण कुमार, डॉ. अंबिली पापा. मानवोंका और डॉ. एलोकेशन द्वारा केंद्रीय के अलावा डॉ. आर.पापा. एलोकेशन, डॉ. रेणु प्रभाजी, डॉ. भगत सिंह, डॉ. नरस राम कुमार, डॉ. अरुण कश्यप, डॉ. प्रियंका, डॉ. यादवी पवित्री, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ.निशा कुमारी, डॉ. कवीता व डॉ. विजय कुमार की भी विदेशी मरणोंसे राह।

अगले वर्ष से होमा बीज उत्पालन :

दृ. ए. के. छावड़ा  
पादप एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष दृ. ए. के. छावड़ा ने कहा कि रोटी के गेहूँमाल के लिए विकासित की गई इस किसिम का चूंच अगले तीव्र किसिमों के लिए उपलब्ध कराया दिया जाएगा। यह किसिम किसी भी देश के लिए उत्तम प्रयोग हो सकता है।

**वैज्ञानिकों की महत्वत विज्ञानितातिक प्रोफेसर समर रिह**

विज्ञानितातिक के कलनीन प्रोफेसर ममा मिशन ने वैज्ञानिकों द्वारा हम उत्तमत्व पर धृति दी और भविष्य में भी उत्तम प्रयोगशाला रहने का आधारन किया। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों को संसाधन बहुत ही कामिनीतातिक है, जिनको बढ़ाव देन अब केंद्रीय शासकीय भर्ताचार्यमण्डल में प्रत्यक्ष का मुख्य विषय है और



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... अभ्यास उत्तरा

दिनांक 15.12.2024 पृष्ठ संख्या ५ कॉलम ७-८

### शिक्षक वर्ग के लिए प्रासंगिक होगा विस्तार प्रबंधन का प्रशिक्षण : डॉ. सिद्धपुरिया

हिसार (ब्लूरो)। विस्तार प्रबंधन की नवीनतम तकनीकों और उनके उपयोग की जानकारी हासिल करने में यह प्रशिक्षण शिक्षक वर्ग के लिए बहुत ही लाभकारी होगा। यह बात चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के निदेशक डॉ. एमएस सिद्धपुरिया ने कही। वे निदेशालय में विस्तार प्रबंधन विषय पर तीन सप्ताह के ऑनलाइन माध्यम से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के सोमवार को हुए शुभारंभ अवसर पर बोल रहे थे।

डॉ. सिद्धपुरिया ने कहा कि यहां से प्रशिक्षण हासिल कर वैज्ञानिक विश्वविद्यालय में विकसित नई तकनीकों और विभिन्न फसलों की किस्मों की जानकारी को ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने में मदद करेंगे। उन्होंने प्रशिक्षण हासिल करने वाले प्रतिभागियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने प्रतिभागियों को निदेशालय के संगठनात्मक सेट अप से परिचित कराया और इसके चार प्रकारों में से प्रत्येक के

अलग-अलग क्षेत्रों के विशेषज्ञ देंगे व्याख्यान : पाठ्यक्रम संयोजिका डॉ. मंजू मेहता ने बताया कि कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों को प्रतिदिन अलग-अलग क्षेत्रों के विशेषज्ञ व्याख्यान देंगे। इनमें पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लूधियाना, गुरु जंगेश्वर विज्ञान एवं तकनीकी विश्वविद्यालय हिसार, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली सहित कई नामी विश्वविद्यालयों व संस्थानों से विशेषज्ञ अपने व्याख्यान देंगे।

कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से सफलतापूर्वक, पूरी लगन और मेहनत से इस कार्यक्रम को पूरा करने का आह्वान किया। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की संयुक्त निदेशक व पाठ्यक्रम संयोजिका डॉ. मंजू मेहता ने बताया कि इस कार्यक्रम में 32 वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञ भाग ले रहे हैं, जिनमें चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व इसके बाहरी केंद्रों, हैदराबाद और लाला लाजपत राय पश्च एवं चिकित्सा महाविद्यालय हिसार के प्रतिभागी शामिल हैं।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....भौजन के सबैरा

दिनांक १५.१२.२०२० पृष्ठ संख्या ५ कॉलम ७-८

### शिक्षक वर्ग के लिए प्रासंगिक होगा विस्तार प्रबंधन प्रशिक्षण : डा. एम.एस. सिद्धपुरिया

हिसार, (सोढी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के निदेशक डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया ने कहा कि विस्तार प्रबंधन की नवीनतम तकनीकों व उनके उपयोग की जानकारी हासिल करने में यह प्रशिक्षण शिक्षक वर्ग के लिए बहुत ही लाभकारी होगा। वे निदेशालय में 'विस्तार प्रबंधन' विषय पर तीन सप्ताह के ऑनलाइन माध्यम से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर बोल रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्राफ़ेसर समर सिंह के द्वारा - निदेशी व मार्गदर्शन में वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञों के लिए आयोजित किया जा रहा है ताकि यहां से विकसित नई-नई तकनीकों व जानकारियों को किसानों तक पहुंचाया जा सके। डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया ने कहा कि यहां से प्रशिक्षण हासिल कर वैज्ञानिक विश्वविद्यालय में विकसित नई-नई तकनीकों व विभिन्न फसलों की किस्मों की जानकारी को ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने में मदद करेंगे। उन्होंने प्रशिक्षण हासिल करने वाले प्रतिभागियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया।



ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते डा. एम.एस. सिद्धपुरिया एवं उपस्थित प्रतिभागी।

वर्ग के लिए बहुत ही लाभकारी होगा। वे निदेशालय में 'विस्तार प्रबंधन' विषय पर तीन सप्ताह के ऑनलाइन माध्यम से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर बोल रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्राफ़ेसर समर सिंह के द्वारा - निदेशी व मार्गदर्शन में वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञों के लिए आयोजित किया जा रहा है ताकि यहां से विकसित नई-नई तकनीकों व जानकारियों को किसानों तक पहुंचाया जा सके। डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया ने कहा कि यहां से प्रशिक्षण हासिल कर वैज्ञानिक विश्वविद्यालय में विकसित नई-नई तकनीकों व विभिन्न फसलों की किस्मों की जानकारी को ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने में मदद करेंगे। उन्होंने प्रशिक्षण हासिल करने वाले प्रतिभागियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... पंजाब कैसरी .....  
दिनांक 15.12.2020 पृष्ठ संख्या 2 कॉलम 6-8

# ‘शिक्षक वर्ग के लिए प्रासंगिक होगा विस्तार प्रबंधन प्रशिक्षण’

## ■ विस्तार प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

हिसार, 14 दिसम्बर (ब्यूरो): विस्तार प्रबंधन की नवीनतम तकनीकों व उनके उपयोग की जानकारी हासिल करने में यह प्रशिक्षण शिक्षक वर्ग के लिए बहुत ही लाभकारी होगा। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के निदेशक डा. एम.एस. सिद्धपुरिया ने कहे। वे निदेशालय में ‘विस्तार प्रबंधन’ विषय पर 3 सप्ताह के ऑनलाइन माध्यम से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर बोल रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह के दिशा-निर्देशों व मार्गदर्शन में वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञों के लिए आयोजित किया जा रहा है, ताकि यहां से विकसित नई-नई तकनीकों व जानकारियों को किसानों तक पहुंचाया जा सके।

डा. एम.एस. सिद्धपुरिया ने कहा कि यहां से प्रशिक्षण हासिल कर वैज्ञानिक विश्वविद्यालय में विकसित नई-नई तकनीकों व विभिन्न फसलों की किस्मों की जानकारी को ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने में मदद करेंगे। उन्होंने प्रतिभागियों को निदेशालय के संगठनात्मक सेटअप से परिचित कराया और इसके 4 प्रक्रोणों में से प्रत्येक के कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की संयुक्त निदेशक व पाठ्यक्रम



ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते डा. एम.एस. सिद्धपुरिया एवं उपस्थित प्रतिभागी।

संयोजिका डा. मंजु मेहता ने बताया कि इस ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में 32 वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञ भाग ले रहे हैं। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को विस्तार प्रबंधन की नवीनतम रुज़ानों व तकनीकों की जानकारी देते हुए उनके उपयोग, ज्ञान व कौशल के बारे में विस्तारपूर्वक बताना है। डा. मेहता ने बताया कि इस ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों को प्रतिदिन अलग-अलग क्षेत्रों के विशेषज्ञ व्याख्यान देंगे। इनमें पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना, गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं तकनीकी विश्वविद्यालय हिसार, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली, सहित कई नामी विश्वविद्यालयों व संस्थानों से विशेषज्ञ अपने व्याख्यान देंगे।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... भैनिक भर्तु, भैनिक ज्ञानार्थ  
दिनांक 15.12.2020 पृष्ठ संख्या 2, 4 कॉलम 7-8, 6

### शिक्षक वर्ग के लिए विस्तार प्रबंधन प्रशिक्षण प्रासंगिक होगा : डॉ. एमएस

हिसार | एचएयू के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के निदेशक डॉ. एमएस सिद्धपुरिया ने कहा कि विस्तार प्रबंधन की नवीनतम तकनीकों व उनके उपयोग की जानकारी हासिल करने में यह प्रशिक्षण शिक्षक वर्ग के लिए बहुत लाभकारी होगा। वे निदेशालय में 'विस्तार प्रबंधन' विषय पर तीन सप्ताह के ऑनलाइन माध्यम से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ पर जोल रहे थे।

कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रौ. समर सिंह के दिशा-निर्देशों व मार्गदर्शन में वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञों के लिए आयोजित किया जा रहा है ताकि यहां से विकसित नई-नई तकनीकों व जानकारियों को किसानों तक पहुंचाया जा सके। डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया ने कहा कि यहां से प्रशिक्षण हासिल कर वैज्ञानिक विश्वविद्यालय में विकसित नई-नई तकनीकों व विभिन्न फसलों की किस्मों की जानकारी को ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने में मदद करेंगे। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की संयुक्त निदेशक व पाठ्यक्रम संयोजिका डॉ. मंजू मेहता ने बताया कि इस ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में 32 वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञ भाग ले रहे हैं।

### शिक्षकों के लिए प्रासंगिक होगा विस्तार प्रबंधन प्रशिक्षण

जास, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में विस्तार प्रबंधन विषय पर तीन सप्ताह के ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। जिसमें एचएयू के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के निदेशक डॉ. एमएस सिद्धपुरिया ने शिरकत की। कार्यक्रम का आयोजन विज्ञानियों, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञों के लिए आयोजित किया जा रहा है। ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में 32 वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञ भाग ले रहे हैं।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... सिटी परस्त.....

दिनांक १५.१२.२०२० पृष्ठ संख्या ..... कॉलम .....

# विस्तार प्रबंधन की नवीनतम तकनीक शिक्षक वर्ग के लिए लाभकारी: डॉ. सिद्धपुरिया

**हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विस्तार प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू**

सिटी परस्त न्यूज़, हिसार। विस्तार प्रबंधन की नवीनतम तकनीकों व उनके उपयोग की जानकारी हासिल करने में यह प्रशिक्षण शिक्षक वर्ग के लिए बहुत ही लाभकारी होगा। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के निदेशक डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया ने कहे। वे निदेशालय में 'विस्तार प्रबंधन' विषय पर तीन सप्ताह के ऑनलाइन माध्यम से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर बोल रहे थे।

डॉ. सिद्धपुरिया ने कहा कि यहाँ से प्रशिक्षण हासिल कर वैज्ञानिक विश्वविद्यालय में विकसित नई-नई तकनीकों व विभिन्न फसलों की किसियों की जानकारी के ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने में मदद करेंगे। उन्होंने प्रशिक्षण हासिल करने वाले प्रतिभागियों से इस प्रशिक्षण का



हिसार। ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया एवं उपस्थित प्रतिभागी।

अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने प्रतिभागियों

को निदेशालय के संगठनात्मक सेट-अप से परिचित कराया और इसके चार प्रकोष्ठों में से प्रत्येक के कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की संयुक्त निदेशक व पाठ्यक्रम संबोधितका डॉ. मंजू महता ने बताया कि इस ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में 32 वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञ भाग ले रहे हैं। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को विस्तार प्रबंधन की नवीनतम रूझानों व तकनीकों की जानकारी देते हुए उनके उपयोग, जान व कोशल के बारे में बताना है। डॉ. अंजु कुमारी ने बताया कि कोरोना महामारी के कारण इस तरह की गतिविधियों को व्यावहारिक रूप से आयोजित करने में बदलाव आया है जिसके चलते इसका ऑनलाइन माध्यम से आयोजन किया गया।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....डॉ. अंजु कुमारी  
दिनांक 15.12.2020 पृष्ठ संख्या.....— कॉलम.....—

### शिक्षक वर्ग के लिए प्रासंगिक होगा विस्तार प्रबंधन प्रशिक्षण : डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया

#### चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विस्तार प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

हिसार/मांगली नलवा, 14 दिसम्बर (राज पराशर/देवानंद सोनी) : विस्तार प्रबंधन की नवीनतम तकनीकों व उनके उपयोग की जानकारी हासिल करने में यह प्रशिक्षण शिक्षक वर्ग के लिए बहुत ही लाभकारी होगा। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के निदेशक डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया ने कहे। वे निदेशालय में 'विस्तार प्रबंधन' विषय पर तीन सप्ताह के ऑनलाइन माध्यम से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर बोल रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह के दिशा-निर्देशों व मार्गदर्शन में वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञों के लिए आयोजित किया जा रहा है ताकि यहां से विकसित नई-नई तकनीकों व जानकारियों को किसानों तक पहुंचाया जा सके। डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया ने कहा कि यहां से प्रशिक्षण हासिल कर वैज्ञानिक विश्वविद्यालय में विकसित नई-नई तकनीकों व विभिन्न फसलों की

किस्मों की जानकारी को ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने में मदद करेंगे। उन्होंने प्रशिक्षण हासिल करने वाले प्रतिभागियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने प्रतिभागियों को निदेशालय के संगठनात्मक सेट-अप से परिचित कराया और इसके चार प्रक्रोष्टों में से प्रत्येक के कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से सफलतापूर्वक, पूरी लगन और मेहनत से इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को पूरा करने का आह्वान किया। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की संयुक्त निदेशक व पाठ्यक्रम संयोजिका डॉ. मंजू मेहता ने बताया कि इस ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में 32 वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञ भाग ले रहे हैं जिनमें चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व इसके बाहरी केंद्रों, हैंदराबाद व लाला लाजपत राय पश्च एवं चिकित्सा महाविद्यालय हिसार के प्रतिभागी शामिल हैं। इस प्रशिक्षण का मुख्य

उद्देश्य प्रतिभागियों को विस्तार प्रबंधन की नवीनतम रूज्ञानों व तकनीकों की जानकारी देते हुए उनके उपयोग, ज्ञान व कौशल के बारे में विस्तारपूर्वक बताना है। डॉ. अंजु कुमारी ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए मंच का संचालन किया। उन्होंने बताया कि कोरोना महामारी के कारण इस तरह की गतिविधियों को व्यावहारिक रूप से आयोजित करने में बदलाव आया है जिसके चलते इसका ऑनलाइन माध्यम से आयोजन किया गया।

अलग-अलग क्षेत्रों के विशेषज्ञ दोंगे व्याख्यान : पाठ्यक्रम संयोजिका डॉ. मंजू मेहता ने बताया कि इस ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों को प्रतिदिन अलग-अलग क्षेत्रों के विशेषज्ञ व्याख्यान देंगे। इनमें पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना, गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं तकनीकी विश्वविद्यालय हिसार, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली सहित कई नामी विश्वविद्यालयों व संस्थानों से विशेषज्ञ अपने व्याख्यान देंगे।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पल पल.....

दिनांक १५.१२.२०२० पृष्ठ संख्या.....कॉलम.....

### सार समाचार

#### कृषि विश्वविद्यालय में विस्तार प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

पल पल न्यूज़: हिसार, 14 दिसंबर। विस्तार प्रबंधन की नवीनतम तकनीकों व उनके उपयोग की जानकारी हासिल करने में यह प्रशिक्षण शिक्षक वर्ग के लिए बहुत ही लाभकारी होगा। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के निदेशक डॉ. एमएस सिद्धपुरिया ने कहे। वे निदेशालय में 'विस्तार प्रबंधन' विषय पर तीन सप्ताह के ऑनलाइन माध्यम से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर बोल रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह के दिशा-निर्देशों व मार्गदर्शन में वैज्ञानिक, शिक्षक व विशेषज्ञों के लिए आयोजित किया जा रहा है ताकि यहां से विकसित नई-नई तकनीकों व जानकारियों को किसानों तक पहुंचाया जा सके। डॉ. एमएस सिद्धपुरिया ने कहा कि यहां से प्रशिक्षण हासिल कर वैज्ञानिक विश्वविद्यालय में विकसित नई-नई तकनीकों व विभिन्न फसलों की किस्मों की जानकारी को ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने में मदद करेंगे। उन्होंने प्रशिक्षण हासिल करने वाले प्रतिभागियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने प्रतिभागियों को निदेशालय के संगठनात्मक सेट-अप से परिचित कराया और इसके चार प्रकोष्ठों में से प्रत्येक के कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से सफलतापूर्वक, पूरी लगन और मेहनत से इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को पूरा करने का आह्वान किया। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की संयुक्त निदेशक व पाठ्यक्रम संयोजिका डॉ. मंजू मेहता ने बताया कि इस ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में 32 वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञ भाग ले रहे हैं जिनमें चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व इसके बाहरी केंद्रों, हैदराबाद व लाला लाजपत राय पशु एवं चिकित्सा महाविद्यालय हिसार के प्रतिभागी शामिल हैं। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को विस्तार प्रबंधन की नवीनतम रूझानों व तकनीकों की जानकारी देते हुए उनके उपयोग, ज्ञान व कौशल के बारे में विस्तारपूर्वक बताना है। डॉ. अंजु कुमारी ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए मंच का संचालन किया। उन्होंने बताया कि कोरोना महामारी के कारण इस तरह की गतिविधियों को व्यावहारिक रूप से आयोजित करने में बदलाव आया है जिसके चलते इसका ऑनलाइन माध्यम से आयोजन किया गया।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... पा४५५ प५५

दिनांक १५.१२.२०२० पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

### शिक्षक वर्ग के लिए प्रासंगिक होगा विस्तार प्रबंधन प्रशिक्षण : डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया



#### पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 14 दिसम्बर : विस्तार प्रबंधन की नवीनतम तकनीकों व उनके उपयोग की जानकारी हासिल करने में यह प्रशिक्षण शिक्षक वर्ग के लिए बहुत ही लाभकारी होगा। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के निदेशक डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया ने कहे। वे निदेशालय में 'विस्तार प्रबंधन' विषय पर तीन सप्ताह के ऑनलाइन माध्यम से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर बोल रहे थे।

कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह के दिशा-निर्देशों व मार्गदर्शन में वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञों के लिए आयोजित किया जा रहा है ताकि यहां से विकसित नई-नई तकनीकों व जानकारियों को किसानों तक पहुंचाया जा सके। डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया ने कहा कि यहां से प्रशिक्षण हासिल कर वैज्ञानिक

विश्वविद्यालय में विकसित नई-नई तकनीकों व विभिन्न फसलों की किस्मों की जानकारी को ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने में मदद करेंगे। उन्होंने प्रशिक्षण हासिल करने वाले प्रतिभागियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने प्रतिभागियों को निदेशालय के संगठनात्मक सेट-अप से परिचित कराया और इसके चार प्रकोष्ठों में से प्रत्येक के कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से सफलतापूर्वक, पूरी लगन और मेहनत से इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को पूरा करने का आह्वान किया। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की संयुक्त निदेशक व पाठ्यक्रम संयोजिका डॉ. मंजू मेहता ने बताया कि इस ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों को प्रतिदिन अलग-अलग क्षेत्रों के विशेषज्ञ व्याख्यान देंगे। इनमें पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना, गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं तकनीकी विश्वविद्यालय हिसार, दिल्ली विश्वविद्यालयों व संस्थानों से विशेषज्ञ अपने व्याख्यान देंगे।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... समस्त दीर्घा  
दिनांक १५.१२.२०२० पृष्ठ संख्या..... १ कॉलम..... १

## शिक्षक वर्ग के लिए प्रासंगिक होगा विस्तार प्रबंधन प्रशिक्षण : डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया

समस्त हरियाणा न्यूज  
हिसार। विस्तार प्रबंधन की नवीनतम  
तकनीकों व उनके उपयोग की  
जानकारी हासिल करने में यह  
प्रशिक्षण शिक्षक वर्ग के लिए बहुत ही  
लाभकारी होगा। ये विचार चौधरी  
चरण सिंह हरियाणा कृषि  
विश्वविद्यालय के मानव संसाधन  
प्रबंधन निदेशालय के निदेशक डॉ.  
एम.एस. सिद्धपुरिया ने कहे। वे  
निदेशालय में 'विस्तार प्रबंधन' विषय  
पर तीन सप्ताह के अँनलाइन माध्यम

से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर बोल रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह के दिशा-निर्देशों व मार्गदर्शन में वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञों के लिए आयोजित किया जा रहा है ताकि यहां से विकसित नई-नई तकनीकों व जानकारियों को किसानों तक पहुंचाया जा सके। डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया ने कहा कि यहां से प्रशिक्षण हासिल कर वैज्ञानिक विश्वविद्यालय में विकसित नई-नई तकनीकों व विभिन्न फसलों की किस्मों की जानकारी को ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने में मदद करेंगे। उन्होंने प्रशिक्षण हासिल करने वाले प्रतिभागियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने प्रतिभागियों को निदेशालय के संगठनात्मक सेट-अप से परिचित कराया और इसके चार प्रकोष्ठों में से प्रत्येक के कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... नमा.....

दिनांक १५.१२.२०२० पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

# प्रशिक्षण में बताई विस्तार प्रबंधन की नवीनतम तकनीकें

हिसार/14 दिसंबर/रिपोर्टर

विस्तार प्रबंधन की नवीनतम तकनीकों व उनके उपयोग की जानकारी हासिल करने में यह प्रशिक्षण शिक्षक वर्ग के लिए बहुत ही लाभकारी होगा। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के निदेशक डॉ. एमएस सिंहपुरिया ने कहे। वे निदेशालय में 'विस्तार प्रबंधन' विषय पर तीन सप्लाह के ऑनलाईन माध्यम से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि यहां से प्रशिक्षण हासिल कर वैज्ञानिक विश्वविद्यालय में विकसित नई-नई तकनीकों व विभिन्न फसलों की किसी की जानकारी को ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने में मदद करेंगे। उन्होंने प्रशिक्षण हासिल करने वाले प्रतिभागियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने प्रतिभागियों को निदेशालय के संगठनात्मक सेट-अप से परिचित कराया और इसके चार प्रकोष्ठों में से प्रत्येक के कार्यों के बारे में जानकारी दी। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की संयुक्त निदेशक व पाठ्यक्रम संयोजिका डॉ. मंजू मेहता ने बताया कि इस ऑनलाईन प्रशिक्षण कार्यक्रम में 32 वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञ भाग ले रहे हैं। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को विस्तार प्रबंधन के नवीनतम रूझानों व तकनीकों की जानकारी देते हुए उनके उपयोग, ज्ञान व कौशल के बारे में बताना है। डॉ. अंजु कुमारी ने बताया कि कोरोना महामारी के कारण इस तरह की गतिविधियों को व्यावहारिक रूप से आयोजित करने में बदलाव आया है जिसके चलते इसका ऑनलाईन माध्यम से आयोजन किया गया।